विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 16 जुलाई 2020

वर्ग सप्तम राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

प्यारे बच्चों ! कल जो पढ़ाया गया था का सारांश इस प्रकार है।

सारांश यह कि सामान्यतया काल - रूप की दृष्टि से संस्कृत में उपयुक्त प्रमुख 9 भेद (अंतिम को छोड़कर) होता है और वे वर्तमान काल - 1+ भूतकाल - 3+भविष्यत्काल -3+ आदेश- अनुज्ञ - आशीर्वदबोधक - 2 क्रिया - रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन सभी रूपों के वाचक कुछ प्रत्यय हैं प्रारंभ में 'ल' (जैसे– लुङ्, लङ्, लिट्, लृट्, लुट्, लृङ्, लट्, लोट् और लिङ्) लगे रहने के कारण इन्हें 'लकार' कहते हैं। ये लकार कालवचन हैं। इन लकारों के स्थान पर ही परस्मैपदी धातुओं के स्थान तिप्, तस्, झि आदि अथवा आत्मनेपदी धातुअओं के साथ त, आताम्, झ आदि पत्यय होते हैं।

परस्मैपदी धातुओं की रूपावलि

1. भू (=होना)

'भू' धातु रूप वाली दस लकारों में दी जाती है। 'भू' धातु का अर्थ है। 'होना'। लकारों के भेद के कारण इसके रूप और अर्थ (काल - बोध कराने की दृष्टि

से) बदलते जाएँगे - 1. लट् - भवति (होता है), 2. लुङ - अभूत् (हुआ),3.लङ् - अभवत्(आजके पहले हुआ)लिट्-बभूव(बहुत पहले हुआ),5.लृट्-भवीष्यति(होगा),6लुट्-भविता(आज के बाद होगा),7लृङ्-अभविष्यत(यदि होगा),8.लोट्-भवतु(होओ,होइए),9.विधिलिङ्(हो,हों,होवें)10.आशीर्लिङ्-भूयात्(हूआ करे)